class 8th sanskrit notes | संकल्प वीरः दशरथ मांझी

पाठ 9 – संकल्प वीरः दशरथ मांझी

संकल्प वीरः दशरथ मांझी
(उपसर्ग , अयादि संधि) .
[प्रस्तुत पाठ में बिहार के एक .....अनुकरणीय है ।]

जयन्ती कर्मवीरास्ते कृतभूरिपरिश्रमाः । सर्वेषामुपकाराय येषां सकल्पसिद्धयः ॥

अर्थ – जिन्होंने खूब परिश्रम किया ऐसे कर्मवीरों आपकी जय हो । क्योंकि आपके द्वारा किया गया कार्य का फल सबों के उपकार के लिए होता है ।

दुर्बलकायः स्वेदमुखः रिक्तोदरः..... चलितुं समर्थाः नासन् ।

अर्थ – दुर्बल शरीर वाला , पसीने से युक्त मुख वाला , भूखा पेट वाला , लंगोटी पहने हुए किसान ग्रामीण क्षेत्रों में सदैव परिश्रम करते रहते हैं । गाँवों में प्राय : अर्थव्यवस्था का आधार कृषि ही है । लेकिन किसान लोग आवश्यक वस्तुओं को खरीदने के लिए निकट के हाटों और दुकानों की ओर जाते हैं । बिहार राज्य के गया जिला में झोपड़ी बाहुल गहलौर नामक गाँव में कोई खेतिहर मजदूर रहता था । उसका नाम दशरथ माँझी था । वह बहुत परिश्रमी और दृढ़ निश्चयी था । उसका गाँव राजगीर पर्वतमाला (समूहों) के एक भाग में था । उसके गाँव का दुकान स्थान (बाजार) वजीरगंज में था । दोनों स्थानों के मध्य पर्वत का संकीर्ण (तंग) मार्ग बाधाकारक था । पैदल जाने वाले लोग भी भारी सामानों के साथ उस मार्ग पर चलने में समर्थ नहीं थे ।

ग्रामे यद्यपि सर्वे..... मार्ग निर्मास्यामि ।

अर्थ – गाँव में जबकि सभी मजदूर और किसान उस बाधा को अनुभव करते थे , लेकिन किसी को भी हदय में रास्ते को चौड़ाकरण में न किसी का उत्साह था और न निश्चय । एक दिन दशरथ मांझी की पत्नी जल से भरे घड़ा लेकर उस रास्ते से गई । घड़ा फूट गया । इस घटना से दशरथ माँझी के मन में संकल्प उत्पन्न हुआ कि इस मार्ग को मैं ही चौड़ा करूँगा । पर्वत के कठोर अहंकार को समाप्त करके लागों के हित के लिए चौड़ा मार्ग का निर्माण करूँगा ।

अनेन संकल्पेन दशरथं प्रति .....वास्तविक सेवकाः ।

अर्थ – इस निश्चय को जानकर ग्रामीण लोग दशरथ मांझी का उपहास भी किया । लेकिन निरक्षर दशरथ दृढ़ निश्चयी हो गया । जबकि वह कुलहाड़ी से काटकर लकड़ी लाने का काम और खेतों को जोतकर जीवन – यापन किया करता था । इसके बाद भी उसी दिन से पत्थर काटने के लिए उपकरणों (छेनी , हथौड़ा) खरीदकर वह अपने संकल्प को पूरा करने में लग गया । दिन बीता और वर्ष भी बीतने चला । इस मजदूर का परिश्रम दिखने लगा । बाईस वर्षों में एक चौड़ा मार्ग पहाड़ के बीच में निर्माण हो गया । इसमें किसी का शारीरिक सहयोग नहीं प्राप्त हुआ । पत्थर के टुकड़े – टुकड़े होकर टूट गये । गहलौर से वजीरगंज का मार्ग छोटा हो गया । इन वर्षों में दशरथ माँझी बहुत सम्मान पाये । वह पर्वतीय मार्ग उन्हीं के नाम से जाना जाता है । उसके बाद ग्राम प्रशासन के द्वारा सामुदायिक भवन और अस्पताल निर्माण उन्हीं के नाम से किया गया । राज्य सरकार उनको " पर्वत पुरुष " इस

https://www.evidyarthi.in/

सम्मानजनक उपाधि से विभूषित किया । दशरथ माँझी के उदाहरण से स्पष्ट होता है कि कोई भी व्यक्ति दृढ़ संकल्प से कुछ भी असम्भव कार्य को करने यश प्राप्त कर सकता है । ऐसे कर्मवीर लोग ही समाज के वास्तविक सेवक होते हैं ।

शब्दार्थ –

कृतभूरिपरिश्रमाः = जिन्होंने खूब परिश्रम किये हैं । सर्वेषाम् = सबका / सबकी , सबके । उपकाराय = उपकार के लिए । संकल्पसिद्धयः = संकल्पित कार्य के फल । दुर्बलकायः = दुबले शरीर वाला । स्वेदमुखः = पसीना युक्त मुँह । रिक्तोदरः = खाली पेट । ग्रामक्षेत्रेषु = ग्रामीण इलाकों में । क्रेतुम् = खरीदने हेतु । निकटस्थान = समीप स्थित (को) । अट्टान् = हाटों को । आपणान् = दुकानों को । उटजप्रधाने = झोपड़ी बहुल । कृषिश्रमिकः = खेतिहर मजदूर । न्यवसत् = निवास करता था । संकीर्णः = सँकरा , तंग । बाधारूपः = बाधा पहुँचाने वाला । पदयात्रिकाः = पदयात्री लोग , पैदल चलने वाले । चलितुम् = चलने में । अनुभूतवन्तः = अनुभव करते थे । विस्तरीकरणे = चौड़ा करने में । नीत्वा = लेकर । भग्नो (भग्नः) जातः = टूट गया । मानसे = मन में । मार्गमेतम् (मार्गम् + एतम्) = इस रास्ते को । अहमेव (अहम् + एव) = मैं ही । विनाश्य = नाश / समाप्त करके । निर्मास्यामि = बनाऊँगा , निर्माण करूँगा । उपहासम् = मजाक । दृढसंकल्पवान् = दृढ़ निश्चय वाला । काष्ठामयनस्य = लकड़ी ढोने का । कुठारेण = कुल्हाड़ी से । कषर्णम् = जुताई । क्षेत्राणाम् = खेतों का / की / के । यापयति = बिताता है । प्रस्तरछेदनाय = पत्थर काटने के लिए । पूरणे = पूरा करने में । प्रवृत्तः = लग गया । व्यतीतानि = बिताये गये / बीत गये । गतानि = गये । अल्पीभूतः = छोटा हो गया । द्वाविंशतिवर्षेषु = बाइस वर्षों में । नाम्ना = नाम से । अभिहितः = पुकारा गया । तदनु = उसके बाद । अयच्छत् दिया । किञ्च = इसके अतिरिक्त । एतादृशाः = इस प्रकार के ।

व्याकरणम्

सन्धिविच्छेदः

कर्मवीरास्ते = कर्मवीराः + ते (विसर्ग सन्धि) ।
रिक्तोदरः = रिक्त + उदरः (गुण – सन्धि) । प्रायेणार्थव्यवस्थायाः = प्रायेण + अर्थव्यवस्थायाः (दीर्घ सन्धि) ।
कृषिरेव = कृषिः + एव (विसर्ग सन्धि) ।
इत्यासीत् = इति + आसीत् (यण् सन्धि) ।
चासीत् = च + आसीत् (दीर्घ सन्धि) ।
यद्यपि = यदि + अपि (यण् सन्धि) ।
नासन् = न + आसन् (दीर्घ सन्धि) ।
कृषिकाश्च = कृषिका : + च (विसर्ग सन्धि) । कठोरस्यापि = कठोरस्य + अपि (दीर्घ सन्धि) । निरक्षरोऽपि = निः + अक्षरः + अपि (विसर्ग सन्धि) ।
काष्ठानयनस्य = काष्ठ + आनयनस्य (दीर्घ सन्धि) । तथापि = तथा + अपि (दीर्घ सन्धि) ।
कस्यापि = कस्य + अपि (दीर्घ सन्धि) । चिकित्सालयश्च = चिकित्सा + आलयः + च (दीर्घ सन्धि) ।
सम्मानोपाधिम् = सम्मान + उपाधिम् (गुण + सन्धि) ।

प्रकृति – प्रत्यय – विभाग :

करोति =√कृ लट् लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन वर्तते=√ वृत् लट् लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन क्रेतुम् =√क्रीन + तुमुन्
गच्छन्ति =√गम् लट् लकार , प्रथम पुरुष , बहुवचन न्यवसत् =√नि + वस् लङ् लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन
आसीत्=√अस् लङ् लकार प्रथम पुरुष , एकवचन संकल्पवान् = संकल्प + मतुप्
अवर्तत=√ वृत लङ्लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन

https://www.evidyarthi.in/

चलितुम्=√ चल + तुमुन्
अनुभूतवन्तः = अनु +√ भू + क्तवतु , पुंल्लिङ्ग , बहुवचन
नीत्वा=√नी + क्त्वा
अगच्छत्=√ गम् लङ्लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन जातः=√ जन् + क्त , पु . , एकवचन
करिष्यामि=√ कृ लृट् लकार , उत्तम पुरुष , एकवचन विनाश्य =वि + √निश् + णिच् + ल्यप्
निर्मास्यामि= निर् +√ मा लुट्लकार , उत्तम पुरुष , एकवचन
कृतवन्तः √कृ+ क्तवतु , पुल्लिङ्ग , बहुवचन
कृत्वा =√कृ+ क्त्वा
यापयति=√या + णिच् , पुगागम , लट् लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन
क्रीत्वा = क्रीन् + क्त्वा
प्रवृत्तः =प्र+ √वृत + क्त पुल्लिङ्ग , एकवचन
गतानि=√गम् + क्त , नपुंसकलिङ्ग , बहुवचन
निर्मितः =निर् + √मा + क्त , पुल्लिङ्ग , एकवचन प्राप्तः= प्र +√आप + क्त , पुल्लिङ्ग , एकवचन लब्धवान्=√ लभ + क्तवतु , पुल्लिङ्ग , प्रथम पुरुष , एकवचन
अभिहितः= अभि+√धा +क्त , पुल्लिङ्ग , एकवचन (पुक् – आगम)
स्थापितः=√स्था + क्त , पुल्लिङ्ग , एकवचन
अयच्छत् =√दाण (यच्छ) लङ्लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन
भवति =√भू लट् लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन
लभते=√लभ लट् लकार प्रथम पुरुष , एकवचन , आत्मनेपदी

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/